आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री की मदद के लिए सहयोगी तंत्र की भूमिका

श्रेष्ठा मिश्रा और रजत शर्मा

आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए सुपरवाइज़र की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ के कुछ आँगनवाड़ी केन्द्रों में हो रहे कामों के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह लेख दर्शाता है कि सुपरवाइज़र विभिन्न गतिविधियों को करने में कार्यकर्त्रियों की मदद कर रहे हैं। इससे आँगनवाड़ी केन्द्रों में बदलाव दिखने लगा है। उनके द्वारा किए जा रहे मार्गदर्शन और सहयोग की वजह से कार्यकर्त्रियों ने एक दूसरे से अपने काम व विचार को साझा करना भी शुरू किया है जिससे इन केन्द्रों पर मिलकर सीखने की संस्कृति पनप रही है।

चित्र 1: आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को मिलने वाला प्रोत्साहन व मार्गदर्शन उनका काम मज़ेदार व आसान बनाता है

एक सुपरवाइज़र आँगनवाड़ी केन्द्र के दौरे पर थीं। उन्होंने देखा कि आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को बच्चों को सँभालने में कठिनाई हो रही थी। उनके पास बहुत कम खिलौने थे, और उनमें से ज़्यादातर टूटे हुए थे। बच्चे ऊब रहे थे, लेकिन सभी बच्चों को एक साथ गतिविधियों में शामिल करना मुश्किल था। सुपरवाइज़र ने कार्यकर्त्री को एक रनिंग ब्लैकबोर्ड का उपयोग करने का सुझाव दिया। उदाहरणस्वरूप, उन्होंने एक गतिविधि करके दिखाई। उन्होंने चॉक ली, उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए, और प्रत्येक बच्चे को एक टुकड़ा दिया। फिर उन्होंने रनिंग ब्लैकबोर्ड पर प्रत्येक बच्चे के लिए जगह चिह्नित की, हर बच्चे को उसकी जगह दिखाई, और उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि उन्होंने जो कुछ भी देखा या सुना हो, उसका चित्र बनाएँ या उसके बारे में लिखें। कुछ बच्चे खड़े हो गए, कुछ अपनी निर्धारित जगह के सामने ज़मीन पर बैठ गए, और चित्र बनाने, लिखने या रेखाएँ खींचने लगे।

> **आँगनवाड़ी सुपरवाइज़र बदलाव के प्रतिनिधि होते हैं। वे जिस अच्छे अभ्यास को किसी एक आँगनवाड़ी में शुरू करते हैं, उसे कई आँगनवाड़ी केन्द्र आसानी से अपना लेते हैं।**

इस गतिविधि के माध्यम से सभी बच्चे काम में मशग़ूल थे, ख़ुशी-ख़ुशी अपनी बात कह रहे थे और कार्यकर्त्री व सुपरवाइज़र को बता रहे थे कि उन्होंने क्या बनाया है। कार्यकर्त्री ने इस अनुभव

को अपने सेक्टर के व्हाट्सऐप ग्रुप पर अन्य कार्यकर्त्रियों के साथ साझा किया। कुछ अन्य कार्यकर्त्रियों ने भी यही रणनीति अपनानी शुरू कर दी।

आँगनवाड़ी सुपरवाइज़र बदलाव के प्रतिनिधि होते हैं। वे जिस अच्छे अभ्यास को किसी एक आँगनवाड़ी में शुरू करते हैं, उसे कई आँगनवाड़ी केन्द्र आसानी से अपना लेते हैं।

आमतौर पर एक सुपरवाइज़र को 8-12 गाँवों में फैले 20-25 आँगनवाड़ी केन्द्रों के संचालन को देखना होता है। उसका काम आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को नियमित सहायता प्रदान करना है ताकि वे बच्चों के साथ कुशलतापूर्वक काम कर सकें। उसके काम में शामिल हैं, केन्द्र में होने वाले काम को ध्यान से देखना; आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों का प्रशिक्षण; पोषण और प्रारम्भिक बाल्यावस्था गतिविधियों का अवलोकन व देखरेख; और समुदायों के साथ अच्छा सामंजस्य बनाना।

सेक्टर सुपरवाइज़रों को अपने सेक्टर की आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को सहयोग देने के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा बहुआयामी अप्रोच के माध्यम से सहायता प्रदान की जाती है। यह अप्रोच काफ़ी कारगर रही है। हमारा मानना है कि अप्रोच के तहत हम जिन तरीक़ों का अनुसरण करते हैं, उनसे आँगनवाड़ी के काम करने के तरीक़ों में काफ़ी बदलाव आया है। इन तरीक़ों ने सुपरवाइज़र और कार्यकर्त्रियों के बीच समन्वय में उल्लेखनीय सुधार किया है, क्योंकि इसके कारण सुपरवाइज़र की भूमिका निगरानी करने की न होकर एक सहयोगी की हो गई है।

आँगनवाड़ी केन्द्रों का नियमित दौरा

आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को अपने बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में शामिल करना होता है, और ऐसा करने में उन्हें कई बार चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जब सुपरवाइज़र नियमित रूप से किसी आँगनवाड़ी केन्द्र का दौरा करते हैं तो वे इन गतिविधियों में कार्यकर्त्री की मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को किसी समूह गतिविधि में सभी बच्चों को सँभालने या व्यवस्थित करने में सहायता की आवश्यकता होती है, सुपरवाइज़र उन्हें छोटी अवधि वाली कुछ गतिविधियों के बारे में बताते हैं ताकि वे अपनी कक्षा का बेहतर संचालन कर सकें।

कार्यकर्त्रियों को साप्ताहिक पाठ योजनाएँ बनाने, और उनका क्रियान्वयन करने में भी सहायता प्रदान की जाती है। उदाहरणस्वरूप, एक आँगनवाड़ी केन्द्र में 21 बच्चे थे। कार्यकर्त्री ने सुपरवाइज़र की मदद से 10 दिनों की अवधि के लिए एक पाठ योजना तैयार कर उसे क्रियान्वित किया। हर दिन वे बच्चों की आयु-वार गतिविधियों को वीडियो और चित्रों के रूप में रिकॉर्ड करतीं, और सेक्टर व्हाट्सऐप ग्रुप पर साझा करती थीं। वे एक या दो विशेषताओं पर भी प्रकाश डालतीं। मसलन, बच्चे पूरी प्रक्रिया के दौरान ख़ुश थे; बच्चों ने गतिविधि करने के बाद अपनी भावनाएँ साझा कीं; बच्चे इस प्रक्रिया के दौरान एक दूसरे की मदद कर रहे थे; आदि। कार्यकर्त्री यह भी बताती थीं कि वे किस प्रकार बच्चों को बोलने और अपनी बात साझा करने का अवसर दे रही थीं, किस प्रकार प्रत्येक बच्चे की बात सुन रही थीं, और उन्हें कैसे प्रतिक्रिया दे रही थीं। इस बात ने समूह की अन्य कार्यकर्त्रियों को भी प्रतिदिन एक या दो गतिविधियाँ चुनने और उन्हें अपने केन्द्रों में दोहराने के लिए प्रेरित किया।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-फ़ाउण्डेशनल स्टेज (एनसीएफ़-एफ़एस) में उल्लिखित सीखने के प्रतिफल और बच्चों के आयु समूहों के अनुरूप, उनको थीम-आधारित अधिगम में शामिल किया जा रहा है। इस दिशा में हाल ही में, कुछ सुपरवाइज़र और कार्यकर्त्रियों ने बच्चों के विकास के पहलुओं, जैसे कि लिखना और रंग भरना, पर अधिक गहराई से काम करना शुरू कर दिया है। सभी सुपरवाइज़र और कार्यकर्त्रियों ने मिलकर वर्कशीट तैयार की हैं। उदाहरण के लिए, शीट में आकृतियों को जोड़ने और रंग भरने के लिए बिन्दीदार रेखाएँ बनाई हैं। बच्चों को रनिंग ब्लैकबोर्ड पर चित्र बनाने और लिखने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है।

इन नियमित दौरों के माध्यम से, सुपरवाइज़र निम्नलिखित तरीक़ों से सहायता कर सकते हैं :

1. अभ्यासों में सुधार

सुपरवाइज़र द्वारा गतिविधियों का प्रदर्शन कार्यकर्त्रियों को उनके थीम-आधारित शिक्षण को मज़बूत बनाने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, जानवरों पर आधारित थीम पर, बच्चों को मशग़ूल करने के लिए प्रभावी तरीक़े के रूप में कविताओं और कहानियों का उपयोग किया जा सकता है। सुपरवाइज़र द्वारा उँगली या छोटी, पतली लकड़ी से बनी कठपुतलियों का उपयोग करके और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ कहानी सुनाने का प्रदर्शन किया जाता है। इससे कार्यकर्त्री को यह समझने में मदद मिलती है कि कठपुतलियों और भावों के इस्तेमाल से कहानी सुनाना कैसे ज़्यादा प्रभावी हो जाता है।

किसी आँगनवाड़ी केन्द्र में एक कार्यकर्त्री कहानी सुनाने की गतिविधि को लेकर थोड़ी उलझन में थीं। उन्होंने बताया कि जब भी वे बच्चों को कहानी सुनाती हैं, बच्चों का ध्यान इतनी जल्दी बँट जाता है कि वे कहानी भी पूरी नहीं कर पातीं। सुपरवाइज़र ने कार्यकर्त्री के कहानी सुनाने के सत्र का अवलोकन किया। उसके बाद उन्होंने उसी कहानी को चित्र कार्ड और आवाज़ में उतार-चढ़ाव का उपयोग करके सुनाया। उन्होंने कुछ जानवरों की आवाज़ों और क्रियाओं की नक़ल की। बच्चों ने न केवल कहानी का आनन्द लिया, बल्कि उसे उत्सुकता से सुना भी। कहानी सुनाने के बाद सुपरवाइज़र ने उनसे कहानी से सम्बन्धित कुछ सरल प्रश्न पूछे जिनका उत्तर बच्चों ने उत्साहपूर्वक दिया।

2. तत्काल सहायता

अवलोकन के दौरान सुपरवाइज़र तत्काल कुछ सहायता प्रदान कर सकते हैं। मसलन, यदि कार्यकर्त्री को सर्कल टाइम में शारीरिक गतिविधि या कविता के दौरान जगह की कमी के कारण सभी बच्चों को एक साथ बैठाना मुश्किल हो रहा हो तो सुपरवाइज़र बच्चों को उनकी आयु के आधार पर दो घेरों में

बैठाने / खड़े होने जैसे तरीक़े सुझा सकते हैं। जैसे, 3-4 वर्ष आयु-वर्ग के लिए भीतरी घेरा, और 4-6 वर्ष आयु-वर्ग के लिए बाहरी घेरा।

मासिक सेक्टर कार्यशालाएँ और बैठकें

सेक्टर बैठकें और कार्यशालाएँ कार्यकर्त्रियों को अच्छे अभ्यासों को साझा करने, शंकाओं का समाधान करने, और अकसर थीम-आधारित सामान्य गतिविधियों की योजना बनाने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

मासिक सेक्टर कार्यशालाओं में, सेक्टर के सुपरवाइज़र या बेहतर अभ्यास करने वाले आँगनवाड़ी केन्द्र की कुछ कार्यकर्त्रियों द्वारा थीम-आधारित गतिविधियों का प्रदर्शन किया जाता है। कार्यकर्त्रियाँ इन कार्यशालाओं में गतिविधियों को पहले अभ्यास के तौर पर करती हैं, फिर इन्हें अपने केन्द्रों में दोहराती हैं। इसके बाद, वे अपने केन्द्रों पर आयोजित गतिविधियों को फ़ोटो, वीडियो तथा अपने विचारों के साथ साझा करती हैं कि उन्होंने क्या समझा है, और वे उसे किस प्रकार क्रियान्वित कर रही हैं। अब तो कुछ कार्यकर्त्रियों ने अपने बच्चों की प्रगति को भी साझा करना शुरू कर दिया है। जैसे कि तीन महीने पहले, जो बच्चा रंग भरने का प्रयास कर रहा था, वह अब गोले के भीतर रंग भरने में सक्षम हो गया है, आदि।

चित्र 2 : सुपरवाइज़र मिल-जुलकर एक दूसरे से सीखने के अवसर बना सकते हैं

सेक्टर मीटिंग में सुपरवाइज़र काम की प्रगति को देखते हैं, और समीक्षा करते हैं कि सभी केन्द्रों में गतिविधियाँ कैसे संचालित की जा रही हैं, किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है और उन्हें कैसे कम किया जा रहा है, आदि। वे व्हाट्सऐप ग्रुप और सेक्टर मीटिंगों में भी नियमित रूप से रचनात्मक प्रतिक्रिया और इन गतिविधियों की तैयारी के महत्त्व पर ज़ोर देते हैं।

ईसीसीई दिवस समारोह

कार्यकर्त्रियों के लिए यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों के सीखने और विकास यात्रा में भाग लेने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करना और समुदाय की सक्रिय भागीदारी बेहद ज़रूरी है। हर महीने ईसीसीई दिवस पर, बच्चों के अधिगम को साझा करने के लिए एक सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है ताकि अभिभावकों की भागीदारी बढ़ाई जा सके, और कार्यकर्त्रियों के काम को पहचान मिल सके। एक केन्द्र की कार्यकर्त्री और सहायिका ने बच्चों और उनके अभिभावकों से कहा कि वे अपने घर में गत्ते के डिब्बे, खाने के रैपर, आदि जैसी इस्तेमाल की हुई और बेकार पड़ी चीज़ें लाएँ। उनका उपयोग करके उन्होंने थीम-आधारित चार्ट, मौसम चार्ट, जन्मदिन बोर्ड, कैलेंडर, कविता चार्ट, आदि तैयार करके प्रिंट-रिच वातावरण बनाना शुरू किया। उन्होंने समुदाय के सदस्यों को ईसीसीई दिवस पर केन्द्र आने के लिए आमंत्रित किया, और वहाँ आए अभिभावकों ने उनके प्रयासों की सराहना की। कार्यकर्त्री ने उन्हें समझाया कि ये सामग्रियाँ बच्चों को सीखने में कैसे मदद करेंगी और उन्हें उनके बच्चों का काम दिखाया।

> **“सभी बच्चों को एक साथ बैठाना मुश्किल हो रहा हो तो सुपरवाइज़र बच्चों को उनकी आयु के आधार पर दो घेरों में बैठाने / खड़े होने जैसे तरीक़े सुझा सकते हैं। जैसे, 3–4 वर्ष आयु–वर्ग के लिए भीतरी घेरा, और 4–6 वर्ष आयु–वर्ग के लिए बाहरी घेरा।”**

मानक अभ्यासों की चेकलिस्ट

आँगनवाड़ियों के कार्यात्मक पहलू को बेहतर बनाने के लिए हमने सात मानकों वाली एक चेकलिस्ट तैयार की है। ये सरल, लेकिन अनिवार्य, आवश्यकताएँ हैं जिनका पालन प्रत्येक केन्द्र को करना चाहिए, और सभी कार्यकर्त्रियों को इन पर काम करना चाहिए। इनमें केन्द्र और उसका वातावरण, बच्चे और उनका विकास, तथा कार्यकर्त्रियों के अभ्यास शामिल हैं।

इन सात मानक अभ्यासों की समीक्षा सेक्टर सुपरवाइज़रों और कार्यकर्त्रियों द्वारा स्वयं की जाती है। इन सात मानकों की प्रगति का नियमित रूप से अवलोकन किया जाता है, और मासिक बैठकों में इस पर चर्चा की जाती है। यह चेकलिस्ट आँगनवाड़ियों के सुचारु संचालन और सभी हितधारकों को

स्पष्ट रूप से मानकों की प्रगति की स्थिति बताने में मदद करती है। इस चेकलिस्ट में शामिल मानक हैं–

1. क्या आँगनवाड़ी निर्धारित समय, सुबह 9:30 से दोपहर 3:30 बजे तक, के अनुसार चलती है?
2. क्या आँगनवाड़ी का वातावरण स्वच्छ और सुरक्षित है?
3. क्या नामांकित बच्चों में से 80 प्रतिशत नियमित रूप से आँगनवाड़ी आते हैं?
4. क्या आँगनवाड़ी में उपयुक्त खेल और मुद्रित सामग्री, जैसे ब्लैकबोर्ड और लर्निंग कॉर्नर, का उपयोग किया जा रहा है?
5. क्या नियमित रूप से आने वाले ये 80 प्रतिशत बच्चे आँगनवाड़ी में आयोजित गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं?
6. क्या कार्यकर्त्री बच्चों के प्रति संवेदनशील हैं; क्या वे बच्चों को अपनी चीज़ें साझा करने, सहयोग करने और आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करती हैं; साथ ही उन्हें व्यस्त और प्रेरित भी रखती हैं?
7. क्या प्रतिदिन मुक्त खेल के अलावा, बच्चों के लिए एक घण्टे की संरचित गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं?

इन मानकों से कई आँगनवाड़ी केन्द्रों को बेहतर ढंग से काम करने में मदद मिली है, और कई कार्यकर्त्रियों ने बेहतर अभ्यास अपनाए हैं जिससे कई केन्द्रों में बच्चों का विकास सुनिश्चित हुआ है। सुपरवाइज़र आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को सहयोग देने, उनकी चुनौतियों को पहचानने और उन पर चर्चा करने, तथा कार्यशालाओं में उनके बेहतर खेल-आधारित अभ्यासों को दूसरों से साझा करने का प्रयास निरन्तर करते रहते हैं।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

श्रेष्ठा मिश्रा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन रायगढ़, छत्तीसगढ़ में कार्यरत हैं। वे राज्य में ईसीई काम में शुरुआत से जुड़ी रही हैं। वर्तमान में वे फ़ाउण्डेशन की क्रेश पहल से जुड़ी हैं।

सम्पर्क : shrestha.mishra@azimpremjifoundation.org

रजत शर्मा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन रायगढ़, छत्तीसगढ़ में कार्यरत हैं। वे गणित, ईसीई के सन्दर्भ व्यक्ति के तौर पर काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : rajat.sharma@azimpremjifoundation.org